अध्याय द्वितीय :–संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

1. प्रस्तावना
2. शोध से संबंधित कार्य

अध्याय द्वितीय :–संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावनाः–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पद है। किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य उस नीव के सामान होता है। जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी होती है। समास्या से संबंधित कार्य का पुनरावलोकन अनुसांधान आधार तथा गुणात्मक स्तर के लिए के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान है। इसमें साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य तथा प्रारम्भिक चरण है। क्षेत्रिय अध्ययनों में जहाॅ उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा आकड़ो का संकलन कार्य होता है। यह हमें पुराने शोधो के बारे में जानकारी देते है। साथ ही उनकी कमियों एवं विशेषताओं को जानकर संबंधित शोध के बारे मे हमें सहायता प्रदान करते है। इसलिए संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन हमारे नये शोधों में विशेष भूमिका निभाते है।

2.2 संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन–

1. **अग्रवाल कुसुम** (1999) ने "असफल एवं उपेक्षित विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न या उनके अनुसार अभिभावको का व्यवहार विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि" पर शोध किया है।

निष्कर्षः–शोधों में उन्होने पाया कि असफल एवं उपेक्षित विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न या उनके अनुसार अभिभावको का व्यवहार विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रुप से प्रभावित करता है।

2.**अग्रवाल रेखा** (1998) ने "माता–पिता द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पद्धति प्रर्दशन बालको के अधिक अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि" पर शोध किया है।

निष्कर्ष –शोधों में उन्होने पाया कि माता–पिता द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पद्धति प्रर्दशन बालको के अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि में योगदान करता है।

3.गर्ग चित्रा (1992) ने "पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन" पर शोध किया है।

निष्कर्ष–शोधों में उन्होने पाया कि पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक सम्बन्ध पाया है।

4.गरीगोटोय एस.एम. (1984) ने 'माता–पिता की विशेषताओं तथा व्यवहार का प्रभाव बालको के समायोजन· पर शोध किया है।

निष्कर्ष-·शोधों में उन्होने पाया कि माता–पिता की विशेषताओं तथा व्यवहार का प्रभाव बालको के समायोजन पर पड़ता है।

5.भदोरिया विवेक (2012) ने "किशोर छात्र–छात्राओं के स्व प्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलिब्ध एवं समायोजन" पर शोध किया है।

निष्कर्ष–शोध में पाया कि किशोर छात्र–छात्राओं के स्व प्रत्यय का उनकी शैक्षिक उपलिब्ध एवं समायोजन में सार्थक संबंध है।

6.कुमार महेश मुझाल एवं कुमार सुभाष (2008) ने "उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजन तथा शैक्षिक उपलिब्ध"पर शोध किया है।

निष्कर्ष–शोध में पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का समायोजन तथा शैक्षिक उपलिब्ध का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

7.कुमार सुभाष (2003) ने "माता–पिता का विद्यार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि" पर शोध किया है।

निष्कर्ष –शोधों में पाया कि माता–पिता का विद्यार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

8.पवार एवं उनिपाल (2008) ने "विद्यार्थियों के लिगं अनुसार उनके परिवारिक, समाजिक स्वस्थ्य, एवंसंवेगात्मक समायोजन का अध्ययन" पर शोध किया है।

निष्कर्ष- शोधों में पाया कि बालक बालिकओं के पारिवारिक सामाजिक, स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायाजोन के मध्य कोई सार्थक अंतर नही है। जबकि विद्यालय समायोजन में सार्थक अंतर है।

9.सक्सेना वन्दना (1988) ने विभिन्न प्रकार के परिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन, अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक-उपलब्धि पर शोध किया है।

निष्कर्ष-शोधों में उन्होने पाया कि विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन, अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक-उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

10. **विद्या प्रतिभा** (2006) ने "विद्यार्थियों में तनाव का कारण विद्यालय का समायोजन एवं उसका प्रभाव पर शोध किया है।

निष्कर्ष- शोधों में पाया कि विद्यार्थियों में तनाव का 40 प्रतिशत कारण विद्यालय में समायोजन न होना।